सेमिनार

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में हुई 'इंटरनेट ऑफ थिंक यूजिंग नोड एमसीयू' पर कार्यशाला

अब ऐसे माइक्रो प्रोसेसर, जो आपको 24 घंटे रखेंगे अपडेट

रायपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

अब इस तरह के माइक्रो प्रोसेसर तैयार किए जा रहे हैं, जिनकी सहायता से घर की सभी चीजों को आसानी से 24 घंटे कंट्रोल किया जा सकता है। वहीं आध्यात्मिक प्रवचन व मेडिसिन में भी इसका उपयोग हो रहा है। सोमवार को पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं फोटानिक्स अध्ययन शाला में आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला में इस तरह की महत्वपूर्ण विषयों की छात्रों को जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति डॉ. हर्षवर्धन तिवारी और डॉ. सीवी रमन यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति एएस झाड़गांवकर ने कार्यक्रम में शिरकत की। वहीं कार्यशाला में एक्सपर्ट के तौर पर डायरेक्टर एनहाइस प्रावेट लिमिटेड अभिज्ञान गिरी और विभागाध्यक्ष डॉ. कविता ठाकुर मौजूद रहीं।

कार्यशाला में एक्सपर्ट अभिज्ञान

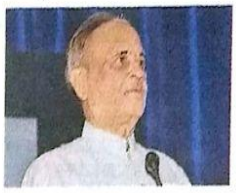

हर्षवर्धन तिवारी

एएस झाड़गांवकर

कंपनी की जगह आप खुद बनाएं प्रोडक्ट

कार्यशाला में एक्सपर्ट अभिज्ञान ने छात्रों को बताया कि 'इंटरनेट ऑफ थिंक्स' को समझने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि इंटरनेट ऐसा माध्यम है, जो घर से लेकर ऑफिस तक आपको आसानी से कनेक्ट कर सकता है। किसी कंपनी के बनाए प्रोडक्ट की अपेक्षा स्टूडेंट्स खुद माइक्रोप्रोसेसर से घर की फ्रिज, डोर, कार, मिटिंग सभी का डाटाबेस तैयार कर सकते हैं। छोटी-छोटी कम्प्यूटर लैंग्वेज में कोडिंग और सिग्नल प्रोसेसिंग के साथ प्रोग्रामिंग करने से नया इनोवेशन हो जाएगा। इसमें उदाहरण के तौर पर घर की फ्रिज में क्या समान है, कितना निकाला गया, कितनी जगह है इस पर डाटाबेस तैयार कर घरेलू चीजों की व्यवस्थाओं को कंट्रोल किया जा सकता है। इसी तरह से कार में कितना पेट्रोल है, वॉशिंग कब करनी है, हवा कितनी है। छोटी-छोटी दैनिक उपयोगी चीजों पर सॉफ्टवेयर बनाया जा सकता है। यदि दोनों ही सॉफ्टवेयर को जोड़ दिया जाए तो दैनिक जीवन को आसान बनाया जा सकता है। जरूरतों का हिसाब मोबाइल रखने लगेगा।

टैली मेडिसिन बन गई माइक्रोप्रोसेसर का हिस्सा

डॉ. सीवी रमन यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति एएस झाड़गांवकर ने कहा कि वर्तमान समय टैली मेडिसिन की सबसे ज्यादा उपयोगी है। मेडिकल के क्षेत्रों में अब माइक्रोप्रोसेसर की सहायता से ऑपरेशन तो होते ही थे, लेकिन अब नोनो मेडिसिन और टैली मेडिसिन भी कारगर साबित हो रही है। शरीर में होने वाली दिक्कतों को इन मेडिसिन में लगे कैमरे से आसानी से देखा जा सकता है। देशभर में यदि इस पर कितना काम हुआ है, कितना होना है, इसका डेटा बेस तैयार कर प्रोग्रामिंग कर सकते हैं।

सांस्कृतिक धरोहर का किया जा सकता है संकलन

बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति डॉ. हर्षवर्धन तिवारी ने छात्रों को बताया कि इंटरनेट थिंक्स के माध्यम सांस्कृतिक धरोहर का संकलन किया जा सकता है। अब नेट में उपलब्ध सभी तरह के साहित्य, आध्यात्मिक प्रवचन सभी के लिंक को प्रोग्रामिंग कर एक जगह आया जा सकता है। इसमें भी भविष्य में बहुत सी संभावनाएं नजर आ रही हैं।

पं. रविवि में इलेक्ट्रॉनिक्स डिपार्टमेंट के छात्रों ने बनाया आइओटी प्रोजेक्ट

अब दुनिया के किसी भी कोने से घर की लाइट कर सकेंगे स्विच ऑफ

सूर्यप्रताप सिंह @ पत्रिका
PLUS रिपोर्टर

रायपुर ● कहते है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है। अगर किसी चीज की आवश्यकता न हो तो उसकी खोज असंभव है। जरूरत ही डिस्कवरी का जरिया बनती है। आप अगर मान लें कि सात एक महीने के लिए बाहर टूर पर गए हैं और अचानक से याद आता है कि आपके घर की लाइट, कूलर और फ्रिज ऑन रह गया है। तो यह बात आपका मूड बिगाड़ सकती है, लेकिन आज का जमाना यूथ का है और टेक्नोलॉजी के इस समय में सब कुछ संभव है।

पंडित रविशंकर शुक्ल यूनिवर्सिटी में इलेक्ट्रानिक्स डिपार्टमेंट के स्टूडेंट्स ने आईओटी 'इंटरनेट ऑफ थिंक' में प्रोजेक्ट तैयार किए है जो वर्ल्ड वाइड लेवल पर कहीं से भी अपने घर की डिवाइस कंट्रोल कर सकते है।

इस तरह की प्रोसेस

फोर्थ सेमेस्टर के स्टूडेंट लव-कुश ने बताया कि घर की डिवाइस में नोड एमसीयू डिवाइस को कनेक्ट करके उसे इंटरनेट से कनेक्ट किया जाता है। इंटरनेट से कनेक्ट होने के बाद उसे मोबाइल से कनेक्ट किया जाता है और वह डाटा ट्रांसफर करने लगता है। मोबाइल पर डाटा ट्रांसफर होने पर उसे सेल से कंट्रोल कर सकते हैं। यह इंटरनेट के माध्यम से कनेक्ट होने पर इसमें सीमित दूरी का प्रावधान नहीं है आप कहीं से भी इसको एप्लाइ कर सकते हैं।

देगा नोटिफिकेशन

कॉलेज के वेदप्रकाश ने बताया कि इस प्रोसेस का नोटिफिकेशन आपके मोबाइल या आपकी आईडी पर आ जाएगा। इसके लिए जब नोड एमसीयू डाटा ट्रांसफर किया जाएगा उसके साथ सेंसर को अटैच करने में नोटिस प्रोवाइड कराएगा। इसके जरिए अगर आपके घर की गैस लीकेज हो रही है, लाइट ऑन है या अन्य डिवाइसेस की सूचना आपको मिल जाएगी।

ब्लिंक एप से जानकारी

इस समस्त प्रोसेस को ब्लिंक एप के जरिए कंट्रोल किया जाएगा जो इंटरफेसिंग करके अपनी प्रोसेस को रिकॉर्ड एवं कंट्रोल करेगी। यह प्लेस्टोर पर फ्री एप्लीकेशन है।

इन्होंने बनाया प्रोजेक्ट

आईटी प्रोजेक्ट में लव, कुश, हर्षा, डॉली, निकेश, वेदप्रकाश, किशन, शुभम, मोनिका, आलिया और अंकिता आदि स्टूडेंट्स ने प्रोजेक्ट डवलप किया है जो इलेक्टॉनिकस एंड फोटोनिकस डिपार्टमेंट की एचओडी डॉ. कविता ठाकुर के मार्गदर्शन में किया जा रहा है।

लाइफ को आसान बनाने के लिए स्टूडेंट्स ने बनाए सिस्टम मॉड्यूल

रायपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

आज के समय में बहुतसी चीजें दैनिक जीवन के लिए उपयोगी हैं, जिनका सामान्यत: रोज उपयोग भी हो रहा है, जैसे फ्रिज, कूलर, एसी, पंखा, लाइट। इन सभी चीजों के उपयोग को इंटरनेट ऑफ थिंक्स किस तरह आसान बनाया जाए, इस पर पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रॉनिक्स व फोटोनिक्स अध्ययन शाला में छात्रों को एक्सपर्ट ने सिखाया। एक्सपर्ट अभिज्ञानम गिरी ने सभी तरह के उपकरण को मॉडयूल से कनेक्ट करने की विधि बताई।

डेटाबेस तैयार कर कनेक्ट करें उपकरण

कार्यशाला में सभी छात्रों को छोटी-छोटी प्रोग्रामिंग लैंग्वेज के सहारे दैनिक जीवन की उपयोगी चीजों को कंट्रोल करना बताया गया। इसमें प्राप्त डेटा बेस के सहारे मॉडयूल से कूलर एसी को ऑफिस से किस तरह कंट्रोल कर सकते हैं, इसकी ट्रेनिंग दी गई। इस मौके पर छात्रों ने घरों के एसी को अपने मोबाइल, कम्प्यूटर से कंट्रोल करना सीखा।

होंगे फायदे, मिलेगा रोजगार

छात्रों को बताया गया कि इस तरह के उपकरण बनाने के कई फायदे हैं, एक तो घर की बिजली की बचत होगी, वहीं इस तरह के उपकरण को बनाने से रोजगार की भी बहुत सी संभावनाएं पैदा होती है। कई बार कई तरह के छोटो उपकरण कारगर साबित हो जाते हैं। इसके अलावा दैनिक जीवन से जुडी चीजों से कनेक्ट करने के लिए बनाए उपकरण का व्यापार भी किया जा सकता है।

फायदे

- ऑफिस से घर की लाइट को मोबाइल से कर सकते हैं बंद।
- घर में बैठे-बैठे ऑफिस का एसी चालू की जा सकती।
- फ्रिज का टंमप्रेचर किया जा सकता है कंट्रोल।
- कार के पेट्रोल का मैसेज आएगा मोबाइल में।
- घर के दरवाजे को कर सकते हैं सिक्यूरिटी से कनेक्ट, चोरी होने पर चला जाएगा पुलिस के पास फोन।

प्रोसेसर और मॉड्यूल से तैयार होते हैं प्रोग्राम

फ्रिज, कूलर, बिजली को कंट्रोल करने के लिए प्रोसेसर के साथ मॉडयूल को कनेक्ट कर यह बनया जाता है। इसमें कम्प्यूट लैंग्वेज जावा, सी, पैथान के सहारे कोडिंग कर सभी तरह के प्रोग्राम बनाए जाते हैं।

रविवि के इलेक्ट्रॉनिक्स डिपार्टमेंट के छात्रों ने पेश किए प्रोजेक्ट

डिवाइस के जरिए आप कहीं से भी रोक सकते हैं गैस लीकेज

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

रायपुर ● रविशंकर शुक्ल यूनिवर्सिटी मे इलेक्ट्रॉनिक्स एंड फोटोनिक्स डिपार्टमेंट मे इड आइज इंफोटेक के तत्वावधान मे इंटरनेट ऑफ थिंग्स पर वर्कशॉप आयोजित किया गया जिसमें स्टूडेंट्स ने अपने प्रोजेक्ट पेश किए और किस तरह डिवाइस को कंट्रोल व ऑपरेट करे उसकी जानकारी ली। बुधवार को ब्लैंक एप्लीकेशन मे पुश नोटिफिकेशन और इमेल के साथ किस तरह इंटरफेसिंग की जाए उसकी क्लास लगी। इसमे डिपार्ट की एचओडी डॉ. कविता ठाकुर उपस्थित रहीं।

सेमिनार में छात्रों को बताया गया कि अगर आपके घर की गैस लीक हो रही है और सेंसर के जरिए आपके मोबाइल पर नोटिफिकेशन आता है तो उसे कहीं से भी ऑपरेट कर पाएंगे। इसके लिए गिरी ने पीसीबी पर किस तरह के सर्किट यूज होंगे उसकी जानकारी दी। गैस के लीक होने पर आपके घर के वाटर पंप पर एक डिवाइस होनी जरूरी है जिसमे नोटिफिकेट की कोडिंग सेम होगी, लेकिन जैसी ही पंप के जरिए वाटर एग्जीटेंस करेंगे तो उसकी प्रोसेंस चेज हो जाएगी। और आप कहीं से भी वाटर पंप या फायर सेफ्टी डिवाइस को कंट्रोल कर सकेंगे।

बताई पीसीबी बोर्ड की डिजाइनिंग

अभिज्ञानंम गिरी ने प्रिंटेड सर्किट बोर्ड की डिजाइनिंग किस तरह की जाती है उसकी जानकारी दी और प्रैक्टिकली स्टूडेंट्स को दिखाया। इसमे उन्होंने सी-लैग्वेज के जरिए कोडिंग करके डिवाइस को कंट्रोल किस तरह किया जाता हे वह भी बताया।

पत्रिका Thu, 29 March 2018
epaper.patrika.com//c/27490600

मोबाइल के सेंसर से तैयार किया फायर सेफ्टी सिस्टम, आग लगने पर तुरंत करेगा अलर्ट

पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में 'इंटरनेट ऑफ थिंक्स' कार्यशाला के तीसरे दिन छात्रों ने तैयार किया फायर सर्किट डिवाइस

रायपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

इनोवेशन के दौर में इलेक्ट्रॉनिक्स इक्यूपमेंट में सबसे महत्वपूर्ण चीज सर्किट होती है। इसे यदि आसानी से बनाना सिख गए तो किसी भी तरह के प्रयोग किए जा सकते हैं। पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में चल रहे 'इंटरनेट ऑफ थिंक्स' की कार्यशाला में विशेषज्ञ अभिज्ञानम गिरी ने यह बातें छात्रों को समझाईं। सॉफ्टवेयर और मॉड्यूल की विशेष ट्रेनिंग देते हुए एक्सपर्ट ने बुधवार को छात्रों को सर्किट डिवाइस तैयार करना सिखाया। कार्यशाला में अनयूज मोबाइल के सेंसर को सर्किट डिवाइस से कनेक्ट कर छात्रों ने ऐसा डिवाइस तैयार किया जो पांच मिनट में आग से घर को सुरक्षित कर देगा।

महज 500 रुपए की लागत से तैयार किया सेफ्टी डिवाइस

एक्सपर्ट अभिज्ञान ने छात्रों को एक अनयूज मोबाइल दिया। उन्होंने कहा कि इसमें लगे सेंसर से आसानी से घर को फायर से बचाया जा सकता है। छात्रों ने इसके लिए सी लैंग्वेज में प्रोग्रामिंग की और सर्किट में सेंसर को कनेक्ट कर घर को आग से सुरक्षित रखने का डिवाइस तैयार कर दिया। 500 रुपये की लागत में तैयार की गई इस डिवाइस को घर के किसी भी कोने में लगाने पर

इन डिवाइस को बनाना सीखा

- बड़े मदरबोर्ड को छोटे रूप में कर डिवाइस लगाना
- हिटिंग पावर को कम करना
- प्रोसेसर की सही जगह लगाना
- कम्प्यूटर लैग्वेज सी से बनाए प्रोग्राम को सर्किट डिवाइस में डालना

धुआं और आग की हिटिंग से सेंसर एक्टीव हो जाएगा। घर के मालिक को मैसेज एलर्ट मिल जाएगा, साथ ही फायर स्टेशन में ऑटोमेटिक कॉल चली जाएगी।

कम जगह में कम्पोनेंट को लगाएं कैसे

आज के समय में छोटे डिवाइस तैयार किए जा रहे है। कार्यशाला में छात्रों को बताया गया कि जगह की कमी होने के कारण कम्पोनेंट को किस तरह से लगाया जाए, ताकि सर्किट में किसी भी प्रकार की हिटिंग की समस्या नहीं आए। वहीं छात्रों को छोटी-छोटी प्रोग्रामिंग लैग्वेज के सहारे दैनिक जीवन की उपयोगी चीजों को कंट्रोल करना भी बताया गया।